

[2024] 4 एस. सी. आर 757:2024 आई. एन. एस. सी. 330

ज्योति देवी

बनाम.

सुकेत अस्पताल और अन्य

(2024 की सिविल अपील संख्या 5256)

23 अप्रैल 2024

[संजय करोल* और अरविंद कुमार, जे जे।]

विचार के लिए मुद्दा

प्रतिवादी अस्पताल में आंत्रपुच्छकोप की शल्य चिकित्सा के बाद, दावेदार- अपीलकर्ता को शल्य चिकित्सा स्थल के पास लगातार दर्द होता रहा। अंततः जाँच करने पर, यह पाया गया कि पेट में ढाई सेंटीमीटर की सुई मौजूद थी और इसे हटाने के लिए एक और सर्जरी करनी पड़ी। जिला फोरम ने अपीलकर्ता को 5 लाख रुपये का भुगतान करने का निर्देश देते हुए पुरस्कार पारित किया। हालांकि, राज्य आयोग ने मुआवजे को घटाकर 1 लाख रुपये कर दिया। एन. सी. डी. आर. सी. ने अंडे के खोल खोपड़ी नियम को लागू करते हुए मुआवजे को बढ़ाकर 2 लाख रुपये कर दिया। अपीलकर्ता ने मुआवजे में वृद्धि की मांग की।

हेडनोट्स

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986-चिकित्सा लापरवाही - सेवा में कमी- मुआवजे की मात्रा का निर्धारण- न्यायसंगत मुआवजा-एग्सशेल खोपड़ी नियम-लागू नहीं होना:

आयोजित किया गया: प्रतिवादी अस्पताल के साथ-साथ प्रतिवादी संख्या 2 की ओर से लापरवाही के तथ्य पर सभी मंचों पर संदेह नहीं किया गया- हालांकि राज्य आयोग ने सुई की उपस्थिति पर जिला मंच के साथ मतभेद किया, लेकिन एन. सी. डी. आर. सी. ने चिकित्सा रिकॉर्ड को पेट में सुई की उपस्थिति की गवाही देने के लिए पाया और यह भी पाया कि प्रतिवादी अस्पताल को ऑपरेशन के बाद की देखभाल के मामले में अभाव पाया गया था-चिकित्सा लापरवाही के मामलों में मुआवजे का दावा करने वाले व्यक्ति की मांगों के साथ-साथ मुआवजे का दावा करने वालों के हितों के बीच एक संतुलन बनाया जाना चाहिए- जो उचित मुआवजे के रूप में योग्य है। प्रत्येक मामले के तथ्यों पर विचार किया जाता है-अस्पताल द्वारा प्रदान की गई सेवा की कमी और अपीलकर्ता की ओर से निरंतर दर्द और पीड़ा के बारे में टिप्पणियों के बावजूद, दिया गया मुआवजा मामूली और अनुचित था-इसके अलावा, अंडे के खोल वाली खोपड़ी नियम चोट पहुँचाने वाले को उस राशि से अधिक नुकसान के लिए उत्तरदायी ठहराता है जो सामान्य रूप से होने की उम्मीद की जाती है- यह एक सामान्य कानून सिद्धांत है जो एक प्रतिवादी को प्रतिवादी की लापरवाही या जानबूझकर किए गए अत्याचार के लिए वादी की अप्रत्याशित और असामान्य

प्रतिक्रियाओं के लिए उत्तरदायी बनाता है- जिन व्यक्तियों के मामलों में इस नियम को लागू किया जा सकता है, वे ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी पहले से मौजूद शर्तें हैं- इसलिए, इस नियम को उचित रूप से लागू करने के लिए, जिस व्यक्ति के मामले में एक न्यायिक प्राधिकरण लागू होता है, उसकी पहले से मौजूद शर्त होनी चाहिए जो चार श्रेणियों में से किसी एक में आती है-विवादित निर्णय इस बारे में चुप है कि वर्तमान मामले में एग्सशेल खोपड़ी नियम कैसे लागू होता है- कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया गया है कि कौन से मानदंड थे जाँच की गई, और फिर, विश्लेषण पर, अपीलकर्ता द्वारा यह कहने के लिए मुलाकात की गई कि उसकी अंडे के खोल की खोपड़ी थी, या उस मामले के लिए, वह किस तरह की पहले से मौजूद स्थिति से पीड़ित थी, जिससे वह आंत्रपुच्छशोथ के लिए सर्जरी के कारण लाई गई ऐसी प्रतिक्रिया के प्रति अधिक संवेदनशील हो गई थी-एन. सी. डी. आर. सी. और राज्य आयोग के पुरस्कार अलग रखे गए जबकि जिला मंच के पुरस्कार बहाल किए गए- 5 लाख रुपये जिसमें 9 प्रतिशत सरल ब्याज का भुगतान प्रतिवादी द्वारा अपीलकर्ता को चिकित्सकीय रूप से लापरवाही बरतने और प्रकृति में कम सेवाएं प्रदान करने के लिए किया जाना था- मुकदमे की लागत @50,000/- भी लगाया गया। [पैरा 11,12.3.1,12.3.3, 12.4.1, 16-18]

सिद्धांत- सामान्य कानून सिद्धांत- यातना का नियम- एग्सशेल खोपड़ी नियम-नियम का अनुप्रयोग- न्यायशास्त्र:

आयोजित किया गया: इस नियम को लागू करने का न्यायशास्त्र, जैसा कि विकसित किया गया है (भारत के अलावा अन्य देशों में), चार श्रेणियों में फिट बैठता है-पहला, जब अभियोक्ता की एक गुप्त स्थिति का पता चला है-दूसरा, जब गलत करने वाले की ओर से लापरवाही एक अभियोक्ता की पहले से मौजूद स्थिति को फिर से सक्रिय करती है जो उपचार के कारण कम हो गई थी-तीसरा, गलत करने वाले के कार्यों से ज्ञात, पहले से मौजूद स्थितियों में वृद्धि होती है, जिन्हें अभी तक चिकित्सा ध्यान नहीं दिया गया है- चौथा, जब गलत करने वाले के कार्यों से अभियोक्ता की स्थिति के कारण एक अपरिहार्य विकलांगता या जीवन की हानि में तेजी आती है। यदि, भले ही समय के साथ, गलती करने वाले के कार्यों की अनुपस्थिति में- जिन व्यक्तियों के मामलों में यह नियम लागू किया जा सकता है, वे ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास पहले से मौजूद शर्तें हैं- इसलिए, इस नियम को उचित रूप से लागू करने और लागू करने के लिए, जिस व्यक्ति के मामले में एक न्यायिक प्राधिकरण लागू होता है, उसकी चार श्रेणियों में से किसी एक में आने वाली पहले से मौजूद शर्त होनी चाहिए।[पैरा 12.4.3]

क्षतिपूर्ति- न्यायसंगत क्षतिपूर्ति:

आयोजित किया गया: मुआवजे का विचार मूल स्थिति में बहाली पर आधारित है, जिसका अर्थ है, नुकसान की भरपाई करना, जहां तक पैसा ऐसा करने में समर्थ है, या दूसरे शब्दों में, इस तरह के मुआवजे के प्राप्तकर्ता को लेना, एक स्थिति में वापस, जैसे कि उन्हें हुई हानि/चोट नहीं हुई थी-क्षतिपूर्ति केवल इसलिए होने की गुणवत्ता हासिल नहीं करती है क्योंकि न्यायाधिकरण इसे ऐसा मानता है- ऐसा होने के लिए, यह प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में पर्याप्त, निष्पक्ष और न्यायसंगत होना चाहिए।[पैरा 12.3.2]

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986- चर्चा का दायरा। [पैरा 12.1.1]

मामला कानून उद्धृत किया गया

सी. वेंकटचलम बनाम अजितकुमार सी. शाह और अन्य [\[2011\] 13 एससीआर 814](#) : (2011) 12 एससीसी 707; जे. जे. मर्चेंट (डॉ.) बनाम श्रीनाथ चतुर्वेदी [\[2002\] सप.1 एससीआर 469](#); (2002) 6 एस. सी. सी. 635; सामान्य कारण बनाम भारत संघ [\[1993\] 1 एससीआर 10](#); (1997) 10 एस. सी. सी. 729; एम. ए. बिविजी अन्य सुनीता और अन्य। [\[2023\] 15 एससीआर 113](#); (2024) 2 एस. सी. सी. 242; जैकब मैथ्यू बनाम पंजाब राज्य [\[2005\] सप.2 एससीआर 307](#); (2005) 6 एस. सी. सी. 1; डॉ. श्रीमती चंदा रानी अखौरी वी.डॉ. एम. ए. मेथुसेथुपती [\[2022\] 5 एससीआर 812](#) : (2022) एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 481; हरीश कुमार खुराना बनाम जोगिंदर सिंह (2021) 10 एस. सी. सी. 291; निजाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बनाम प्रशांत एस. धनंका [\[2009\] 9 एससीआर 313](#) : (2009) 6 एससीसी 1; सरला वर्मा बनाम डीटीसी [\[2009\] 5 एससीआर 1098](#); (2009) 6 एस. सी. सी. 1-निर्भर।

बलराम प्रसाद अन्य कुणाल साहा और अन्य। [\[2013\] 12 एससीआर 30](#) : (2014) 1 एस. सी. सी. 384; वी. कृष्णकुमार अन्य तमिलनाडु राज्य और अन्य। [\[2015\] 8 एससीआर 100](#) : (2015) 9 एससीसी 388; नंद किशोर प्रसाद अन्य मोहिब हमीदी और अन्य। [\[2019\] 7 एससीआर 1076](#) : (2019) 6 एस. सी. सी. 512-संदर्भित।

वासबर्ग बनाम पुटनी [50 एन. डब्ल्यू. 403 \(विस 1891\)](#) ; डुलियू बनाम वाइल एंड संस [\(1901\) 2 के. बी 669](#) ; सफेद और अन्य बनाम। दक्षिण यॉर्कशायर के मुख्य सिपाही और अन्य ; एथे बनाम लियोनाती [\[1996\] 3 एससीआर 458](#) ; जेम्स ई. नीहस और डेनिस नीहस बनाम विंस लाइबेरियो और फ्रैंक विटोरियो [973 एफ. 2डी 526 \(7टी सर। 1992\)](#) ; लैंकैस्टर बनाम नॉरफॉक और पश्चिमी राइ। कं. [773 एफ. 2डी 807,820 \(7वां सिर। 1985\)](#) - संदर्भित किया गया।

उद्धृत पुस्तकें और पत्रिकाएँ

मार्क ए. गीस्टफेल्ड, प्रॉक्सिमेट कॉज अनटैंगल्ड, 80 एम. डी. एल. रेव. 420 (2021); स्टीव पी. कैलेंड्रिलो और डस्टिन ई. ब्युएलर, एगशेल इकोनॉमिक्स: एक क्रांतिकारी एगशेल अभियोक्ता नियम, 74 ओहायो सेंट एल. जे. 375 (2013) के लिए दृष्टिकोण; टॉर्ट्स का पुनर्कथन (तीसरा): शारीरिक और भावनात्मक नुकसान के लिए देयता, अमेरिकी कानून संस्थान, 2010-संदर्भित।

अधिनियमों की सूची

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986

मुख्य शब्दों की सूची

चिकित्सा लापरवाही; सेवा में कमी; पेट में सुई; सर्जरी के बाद लगातार दर्द और पीड़ा; ऑपरेशन के बाद की देखभाल; मुआवजे की मात्रा का निर्धारण; न्यायसंगत मुआवजा; अंडे के खोल की खोपड़ी का नियम; सामान्य कानून सिद्धांत।

मामला सामने आ रहा है

सिविल अपीलिय न्यायनिर्णय: 2024 की दीवानी याचिका सं 5256

2015 के आर. पी. सं. 57 में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग, नई दिल्ली के दिनांक 01.09.2015 के निर्णय और आदेश से

दलों के लिए उपस्थिति

सुभाष चंद्रन के. आर., सुश्री कृष्णा एल. आर., बीजू पी. रमन, अधिवक्ता, अपीलकर्ता के लिए।

मृत्युंजय कुमार सिन्हा, श्रीमती विमल सिन्हा, जे. पी. एन. शाही, रामेश्वर प्रसाद गोयल, अधिवक्ता प्रतिवादीओं के लिए।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय/आदेश

फैसला

संजय करोल, जे.

मामला स्वीकार किया

2. सामान्य परिस्थितियों में, आंत्रपुच्छकोप से संबंधित प्रक्रिया को नियमित माना जाता है। ज्योति देवी¹ के लिए ऐसा नहीं हुआ। उन्हें 28 जून 2005 को सुकेत अस्पताल, सुंदरनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश में भर्ती कराया गया था और डॉ. अनिल चौहान, वरिष्ठ सर्जन, सुकेत अस्पताल द्वारा उनकी आंत्रपुच्छशोथ को हटा दिया गया था। सर्जरी के बाद, वह

¹ इसके बाद, 'दावेदार-अपीलार्थी'

30 जून 2005 को उन्हें छुट्टी दे दी गई थी। हालांकि, उनकी मुसीबतें यहीं खत्म नहीं हुईं। शल्य चिकित्सा स्थल के पास उन्हें लगातार दर्द होता रहा, जैसे कि उन्हें 26 जुलाई 2005 को फिर से भर्ती कराया गया, लेकिन अगले दिन इस आश्वासन के साथ छुट्टी दे दी गई कि उन्हें आगे कोई दर्द नहीं होगा। डॉ. अनिल चौहान प्रतिवादी नं. 2 के संदर्भ में मंडव अस्पताल, मंडी के डॉ. एल. डी. वैद्य ने उनका इलाज किया। यहाँ फिर भी, उसकी पीड़ा का कोई अंत नहीं था। यह प्रक्रिया चार साल तक जारी रही।

3. दावेदार- अपीलकर्ता अंततः पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, चंडीगढ़ में इलाज के लिए आई। जाँच के बाद, यह पाया गया कि एक ढाई सेंटीमीटर बाहरी शरीर (सुई) "पूर्ववर्ती क्षेत्र में पूर्ववर्ती पेट की दीवार के नीचे मौजूद है जो पिछले पेट के निशान (एपेन्डेक्टॉमी) के मध्य में है" जिसके लिए इसे हटाने के लिए एक और सर्जरी करनी पड़ी।
4. प्रतिवादी- सुकेत अस्पताल की ओर से लापरवाही का आरोप लगाते हुए, कुल Rs.19,80,000/- के लिए "भारी दर्द और उपचार पर पैसा खर्च करने" का दावा किया गया था।
5. जिला उपभोक्ता विवाद निवारण मंच, मंडी, एच. पी.², उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 की खंड 12 के तहत 18 दिसंबर, 2013 को दिए गए निर्णय के माध्यम से 2011 के शिकायत मामले का निर्णय लेते हुए, यह निष्कर्ष निकाला गया:-

"15. हाथ में मामले में, शिकायतकर्ता को विरोधी पक्षों न. 1 और 2 की लापरवाही के कारण पांच साल से अधिक समय से शारीरिक दर्द का सामना करना पड़ा है।।...हम महसूस करते हैं कि शिकायतकर्ता की चोट को पूरा करने के लिए एकमुश्त रुपये का मुआवजा उचित और उचित है।...विरोधी पक्ष सं। 3 और 4 ने याचिका दायर की है कि वे किसी व्यक्ति की मृत्यु, चोट, बीमारी या बीमारी के अनुबंध के अनुसार केवल शारीरिक चोट के लिए उत्तरदायी हैं।वर्तमान मामले में शिकायतकर्ता का संचालन विरोधी पक्ष नं.2 आंत्रपुच्छकोप के लिए, लेकिन ऑपरेशन के बाद, शिकायतकर्ता को दर्द होने लगा और टांके से मवाद निकलने लगा और उसका पीजीआई में ऑपरेशन किया गया, जहाँ डॉक्टर ने उसके पेट से सुई निकाली।इसलिए, शिकायतकर्ता का मामला चोट और बीमारी के तहत आता है और विरोधी पक्ष न. 3 और 4 विरोधी पक्षों के खिलाफ दिए गए मुआवजे का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी हैं।1 और 2 बीमाकर्ता हैं "

6. वर्तमान प्रतिवादी द्वारा दायर अपील पर (2014 की पहली अपील No.70 दिनांक 23 सितंबर 2014) एच. पी. राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग, शिमला³ यह देखा गया कि:-

“...जब शिकायतकर्ता का आंत्रपुच्छकोप हटाने के लिए ऑपरेशन किया गया था, तब सर्जरी स्थल पर, अपीलार्थियों के अस्पताल में सुई नहीं छोड़ी गई थी, फिर भी दलीलों और रिकॉर्ड पर साक्ष्य के समग्र अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि अपीलार्थियों के क्लिनिक में की गई सर्जरी दर्द का कारण थी, जो शिकायतकर्ता को कम से कम दिसंबर, 2008 तक हो रहा था, जब मवाद निकल गया था।”

7. इसमें प्रतिवादी को अपीलकर्ता को शारीरिक पीड़ा, मानसिक पीड़ा और उसके द्वारा किए गए खर्चों के लिए 1,00,000 रुपये की क्षतिपूर्ति करने के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था, जिससे आंशिक रूप से प्रत्यर्थी की अपील की अनुमति मिल गई।
8. राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग⁴, राज्य आयोग के आदेश से उत्पन्न 2015 की पुनरीक्षण याचिका 57 में कहा गया है कि प्रतिवादी द्वारा प्रदान की गई शल्य चिकित्सा के बाद की देखभाल आकस्मिक थी और चिकित्सा देखभाल के मानक से कम थी। वे गैर-उपचार सर्जिकल घाव की जांच करने में विफल रहे थे जिससे सेवा में कमी हो गई थी। एन. सी. डी. आर. सी. ने इस तर्क को प्रतिग्रहण करना करने से इनकार कर दिया कि चूंकि अपीलकर्ता को अन्य अस्पतालों में भी देखभाल मिली थी, इसलिए यह निर्धारित करना मुश्किल होगा कि पेट में सुई के लिए कौन जिम्मेदार था।
9. अंडा-खोपड़ी नियम एक व्यक्ति को उनके कार्य के सभी परिणामों के लिए उत्तरदायी ठहराने के लिए लागू किया गया था। राज्य आयोग द्वारा दिए गए मुआवजे को बढ़ाकर रु. 2,00,000-कर दिया गया।
10. इसलिए, दावेदार-अपीलकर्ता मुआवजे में वृद्धि की मांग करते हुए वर्तमान अपील को प्राथमिकता देता है। हम पर्याप्त स्पष्टता के लिए कह सकते हैं कि वर्तमान विवाद उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 की रूपरेखा के भीतर उत्पन्न हुआ, जो वर्तमान उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 का पूर्ववर्ती कानून है।

3 संक्षेप में, 'राज्य आयोग'

4 संक्षिप्तता के लिए, 'NCDRC'

11. प्रतिवादी अस्पताल के साथ-साथ प्रतिवादी संख्या 2 की ओर से लापरवाही के तथ्य पर सभी मंचों पर संदेह नहीं किया गया है। हालाँकि राज्य आयोग ने सुई की उपस्थिति पर जिला मंच के साथ मतभेद किया था, लेकिन एन. सी. डी. आर. सी. ने विवादित निर्णय और आदेश के पैरा 5 में, पेट में सुई की उपस्थिति की गवाही देने के लिए चिकित्सा रिकॉर्ड पाया और यह भी पाया कि प्रतिवादी अस्पताल को ऑपरेशन के बाद की देखभाल के मामले में अभाव पाया गया था।
12. प्राथमिक आधार में आरोप लगाया गया कि चिकित्सा लापरवाही का निष्कर्ष अनुचित है, यह दर्ज किया गया है कि समय का एक अंतराल है जहां अपीलकर्ता को किसी भी दर्द (डेढ़ साल) से पीड़ित नहीं था। हालाँकि, हम देखते हैं कि एन. सी. डी. आर. सी. ने उनकी पीड़ा की अवधि को 5 साल से अधिक माना है, जिसका अर्थ है कि पीड़ा के पहलू में अंतर को स्वीकार नहीं किया गया है। इससे अलग दृष्टिकोण रखने के लिए हमारे सामने कोई सामग्री नहीं रखी गई है। प्रतिवादी वे नहीं हैं जिन्होंने इस न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। इस प्रकार, हमें केवल मुआवजे की पर्याप्तता की जांच करने की आवश्यकता है जैसा कि इसके माध्यम से दिया गया है। हालाँकि, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे और उद्देश्य पर इस न्यायालय के सराहनीय निर्णयों के बिना ऐसा नहीं किया जा सकता है; चिकित्सा लापरवाही; और ऐसे मामलों में मुआवजे के रूप में भी, 'अंडे की खोपड़ी' नियम के रूप में जाना जाने वाला अपकृत्य कानून का नियम।

12.1 उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का दायरा

12.1.1 इस न्यायालय के निर्णयों की जांच [सी.वेंकटचलम बनाम अजितकुमार सी. शाह और अन्य](#)⁵ और [जे. जे. मर्चेंट \(डॉ.\) बनाम श्रीनाथ चतुर्वेदी और सामान्य कारण बनाम भारत संघ](#)⁶ कई अन्य घोषणाओं के बीच, इस संबंध में निम्नलिखित का पता चलता है:-

- i. यह एक परोपकारी, सामाजिक रूप से उन्मुख कानून है, जिसका घोषित उद्देश्य उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना है।
- ii. इसका लक्ष्य दोषपूर्ण वस्तुओं और कम सेवाओं के खिलाफ उपभोक्ताओं की शिकायतों के लिए सस्ता और त्वरित उपचार प्रदान करना है।

5 [\[2011\] 13 एससीआर 814](#) : (2011) 12 एससीसी 707

6 [\[2002\] सप.1 एससीआर 469](#) : (2002) 6 एस. सी. सी. 635

7 [\[1993\] 1 एससीआर 10](#) : (1997) 10 एस. सी. सी. 729

iii. उपर्युक्त उद्देश्य के लिए, इन शिकायत निवारण निकायों की सभी व्यक्तियों तक पहुंच को ध्यान में रखते हुए, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तरों पर अर्ध-न्यायिक निकायों की स्थापना की गई है।

iv. इन निकायों का गठन पीड़ित उपभोक्ता को दीवानी मुकदमा दायर करने की परेशानी से बचाने के लिए किया गया है, यानी प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का विधिवत पालन करने के बाद, पुरस्कार की प्रकृति में त्वरित उपचार या जहां उचित हो, मुआवजा प्रदान करना।

12.2 चिकित्सा लापरवाही पर कानून

12.2.1 चिकित्सा लापरवाही को साबित करने के लिए आवश्यक तीन कारक, जैसा कि हाल ही में इस न्यायालय द्वारा देखा गया है एम. ए. बिबिजी बनाम सुनीता और अन्य⁸, में ऐतिहासिक घोषणा के बाद जेकबमैथ्यू बनाम पंजाब राज्य⁹, ये हैं:-

“36.जैसा कि ऊपर से निकाला जा सकता है, चिकित्सा लापरवाही के कार्य को निर्धारित करने में तीन आवश्यक तत्व हैं:(1.) शिकायतकर्ता को दिया गया देखभाल का कर्तव्य, (2.) देखभाल के उस कर्तव्य का भंग, और (3.) कर्तव्य के उक्त भंग के कारण शिकायतकर्ता को हुई क्षति, चोट या नुकसान।हालांकि, एक चिकित्सा व्यवसायी को केवल उन परिस्थितियों में लापरवाही के लिए उत्तरदायी ठहराया जाएगा जब उनका आचरण एक उचित रूप से सक्षम चिकित्सक के मानकों से नीचे हो।”

12.2.2 एक डॉक्टर को उत्तरदायी ठहराने के लिए, इस न्यायालय में डॉ. श्रीमती चंदा रानी अखौरी बनाम डॉ. एम. ए. मेथुसथुपती¹⁰ यह देखा गया:-

“....एक चिकित्सा व्यवसायी को केवल इसलिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जाना चाहिए क्योंकि दुर्घटना या दुस्साहस से चीजें गलत हो गईं या दूसरे की तुलना में उपचार के एक उचित पाठ्यक्रम को चुनद्वारा में निर्णय की त्रुटि के कारण।

चिकित्सा के अभ्यास में, उपचार के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं। एक वास्तविक मतभेद हो सकता है। हालांकि, उपचार के पाठ्यक्रम को अपनाते समय, चिकित्सा व्यवसायी पर यह कर्तव्य डाला जाता है कि उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके द्वारा पालन किए जा रहे चिकित्सा प्रोटोकॉल उसके कौशल और क्षमता के

8 [2023] 15 एससीआर 113 : (2024) 2 एससीसी 242

9 [2005] सप.2 एससीआर 307 : (2005) 6 एससीसी 1

10 [2022] 5 एससीआर 812: 2022 एससीसी ऑनलाइन एससी 481

अनुसार हो। दिए गए समय पर, चिकित्सा व्यवसायी केवल तभी उत्तरदायी होगा जब उसका आचरण उसके क्षेत्र में एक उचित रूप से सक्षम चिकित्सक के मानकों से नीचे हो।”

(जोर दिया गया)

12.2.3 हरीश कुमार **खुराना बनाम जोगिंदर सिंह में अवलोकन**¹¹ शिक्षात्मक भी हैं। जे. बोपन्ना ने न्यायालय के लिए लिखते हुए कहा:

“...यह आवश्यक है कि अस्पताल और डॉक्टरों को सभी परिस्थितियों में रोगी के इलाज में पर्याप्त देखभाल करने की आवश्यकता हो। हालांकि, दुर्भाग्यपूर्ण मामलों में, हालांकि मृत्यु हो सकती है और यदि यह चिकित्सा लापरवाही के कारण होने का आरोप लगाया जाता है और उस संबंध में दावा किया जाता है, तो यह आवश्यक है कि निर्णय लेने निर्णायक प्राधिकरण के समक्ष पर्याप्त सामग्री या चिकित्सा साक्ष्य उपलब्ध होना चाहिए ताकि किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।”

(जोर दिया गया)

ये अवलोकन, हालांकि एक रोगी के उपचार के दौरान या उपचार के परिणामस्वरूप निधन के संदर्भ में किए गए हैं, फिर भी उन मामलों में भी आवश्यक हैं जहां दावेदार को चोट लगी है।

12.3 क्षतिपूर्ति की मात्रा का निर्धारण

12.3.1 इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया है कि चिकित्सा लापरवाही के मामलों में मुआवजे का निर्धारण करने में, दावा करने वाले व्यक्ति की मांगों के बीच संतुलन बनाना होगा क्षतिपूर्ति, साथ ही उन लोगों के हितों को भी जिन्हें भुगतान करने के लिए उत्तरदायी बनाया जा रहा है। यह देखा गया है कि निजाम का संस्थानचिकित्सा विज्ञान बनाम प्रशांत एस. धनंक¹²।

“88. हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि अदालत को पीड़ित की बढ़ी हुई और अनुचित मांगों और विरोधी पक्ष के समान रूप से असमर्थनीय दावे के बीच संतुलन बनाना होगा, जिसमें कहा गया है कि कुछ भी देय नहीं है। पीड़ित के प्रति सहानुभूति सही मूल्यांकन करने के रास्ते में नहीं आती है और न ही आनी चाहिए, लेकिन यदि

11(2021) 10 एस. सी. सी. 291

12 [2009] 9 एससीआर 313 : (2009) 6 एससीसी 1

कोई मामला बनता है, तो अदालत को पर्याप्त मुआवजा देने में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। जिस "पर्याप्त मुआवजे" की हम बात करते हैं, वह कुछ हद तक एक नियम होना चाहिए, और एक संतुलन बनाने के लिए, सभी संबंधित पक्षों को संतुष्ट करना मुश्किल होगा।

89. यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि जीवन के अपने नुकसान हैं और पूरे रास्ते में सहज यात्रा नहीं है (जैसा कि एक दावेदार हमें विश्वास दिलाता है) क्योंकि हमेशा आने वाली अड़चनों की कल्पना नहीं की जा सकती है। ऐसा कहा जाता है कि जीवन एक रोलर-कोस्टर पर सवारी के समान है जहां एक उल्कापिंड के उदय के बाद अक्सर एक समान रूप से शानदार गिरावट होती है, और दोनों के बीच की दूरी (जैसा कि इस मामले में) एक मिनट या एक यार्ड है।”

उसी फैसले में, यह आगे देखा गया, विशेष रूप से व्यक्ति के घायल होने के मामलों में:-

“90. साथ ही हम अक्सर पाते हैं कि दुर्घटना में घायल व्यक्ति अपने परिवार को मृत्यु के मामले में परिवार की तुलना में अधिक संकट में छोड़ देता है। बाद के मामले में, प्रारंभिक झटका इस्तीफे और स्वीकृति की भावना को रास्ता देता है, और समय के साथ, परिवार को आगे बढ़ने के लिए मजबूर करता है। हालाँकि, एक घायल और विकलांग व्यक्ति का मामला अधिक दयनीय होता है और चोट, असहायता, निराशा और अक्सर निर्धनता की भावना हर किसी को आकर्षित करती है। एक दिन। एक गंभीर रूप से विकलांग व्यक्ति को जिस समर्थन की आवश्यकता होती है, वह न केवल पीड़ित पर बल्कि उसके परिवार और परिचारकों पर भी भारी, शारीरिक, वित्तीय और भावनात्मक कीमत पर आता है और तनाव उनकी ऊर्जा को कम कर देता है और उनकी समता को नष्ट कर देता है।”

12.3.1 'न्यायसंगत मुआवजे' की अवधारणा को संदर्भित करना भी शिक्षाप्रद होगा। मुआवजे का विचार *मूल स्थिति* में बहाली पर आधारित है, जिसका अर्थ है, *जहां तक पैसा* ऐसा करने में समर्थ है, नुकसान की भरपाई करें, या, दूसरे शब्दों में, इस तरह के मुआवजे के प्राप्तकर्ता को एक स्थिति में वापस ले जाएं, जैसे कि उन्हें नुकसान/चोट नहीं हुई थी। मैं। [सरला वर्मा बनाम डीटीसी](#)¹³ इस न्यायालय ने कहा कि क्षतिपूर्ति केवल इसलिए होने की गुणवत्ता हासिल नहीं करती है क्योंकि उसे प्रदान करने वाला न्यायाधिकरण ऐसा मानता है। ऐसा होने के लिए, यह होना चाहिए, (i) *पर्याप्त*; (ii) उचित; और (iii) प्रत्येक *मामले* के तथ्यों और

परिस्थितियों में न्यायसंगत। इस समझ को दोहराया गया था बलरामप्रसाद बनाम कुणाल साहा और अन्य¹⁴, वी. कृष्णकुमार v. तमिलनाडु राज्य और अन्य,¹⁵ और नंद किशोरप्रसाद बनाम मोहिब हमीदी और अन्य¹⁶.

12.3.2 जैसा कि ऊपर देखा गया है, न्यायसंगत मुआवजे के रूप में क्या योग्य है, प्रत्येक मामले के तथ्यों में **विचार किया** जाना चाहिए। बलराम प्रसाद (ऊपर) में यह देखा गया है कि यह अदालत 'चिकित्सा लापरवाही के दावों में मुआवजे की मात्रा निर्धारित करने के लिए एक सीधी जैकेट गुणक विधि का उपयोग करने के बारे में संदेहपूर्ण रही है'।

12.3 अंडे के खोल खोपड़ी नियम

12.4.1 यह नियम (एन. सी. डी. आर. सी. द्वारा लागू) चोट पहुँचाने वाले को उस राशि से अधिक नुकसान के लिए उत्तरदायी ठहराता है जो सामान्य रूप से होने की उम्मीद की जाती है। यह एक सामान्य कानून सिद्धांत है जो प्रतिवादी की लापरवाही के प्रति वादी की अप्रत्याशित और असामान्य प्रतिक्रियाओं के लिए प्रतिवादी को उत्तरदायी बनाता है या जानबूझकर यातना देना। सरल शब्दों में, एक व्यक्ति जिसकी अंडे के खोल की खोपड़ी है, वह वह है जो एक कार्य से अधिक गंभीर रूप से प्रभावित होगा, जिसे अन्यथा एक "सामान्य व्यक्ति" सहन करने में समर्थ होगा। इसलिए इसे अंडे के खोल के रूप में दर्शाने के लिए अंडे का खोल शब्द अपनी प्रकृति से भंगुर है। इसे अन्यथा "पीड़ित को वैसा ही लेना जैसा कोई उन्हें पाता है" कहा जाता है और इसलिए, एक कार्य करने वाला पीड़ित पर इस तरह के कार्य के अधिक गंभीर प्रभाव के लिए उत्तरदायी होगा।

12.4.2 यह नियम अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है और अक्सर इसका आधार बना है जिसके लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में मुआवजा दिया गया है। इतना ही नहीं, एक प्रसिद्ध ग्रंथ इस प्रकार दर्ज करता है "व्यापक शोध नियम को अस्वीकार करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के एक भी मामले की पहचान करने में विफल रहा है"¹⁷ इसकी उत्पत्ति, यदि उस नाम से नहीं है, तो वाशिंगटन राज्य सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले में 1891 में पता लगाया गया है - वासबर्ग बनाम पुटनी¹⁸। इस मामले में, बचपन के एक सामान्य विवाद से उत्पन्न, पुटनी, एक बारह वर्षीय बच्चे ने चौदह वर्षीय वासबर्ग को लात मारी थी, जिससे

14 [2013] 12 एससीआर 30 : (2014) 1 एस. सी. सी. 384

15 [2015] 8 एससीआर 100 : (2015) 9 एस. सी. सी. 388

16 [2019] 7 एससीआर 1076 : (2019) 6 एस. सी. सी. 512

17 मार्क ए. गीस्टफेल्ड, प्रॉक्सिमेट कॉज अनटैंगल्ड, 80 एम. डी. एल. रेव. 420 (2020)

18 50 एन. डब्ल्यू. 403 (विस 1891)

पिछली चोट (जिसके बारे में पुटनी को पता नहीं था) बढ़ गई, जिससे वह स्थायी रूप से अक्षम हो गया। पुटनी को दोषी ठहराया गया था। अदालत ने राय दी कि "गलत काम करने वाला सीधे गलत काम से होने वाली सभी चोटों के लिए उत्तरदायी है, चाहे वे उसके द्वारा पूर्वानुमेय किए जा सकते थे या नहीं।"

12.4.3 इस नियम के अनुप्रयोग का न्यायशास्त्र, जैसा कि विकसित हुआ है, (भारत के अलावा अन्य देशों में) चार श्रेणियों में फिट बैठता है।¹⁹ **पहला**, जब अभियोक्ता की एक गुप्त स्थिति का पता चला है; **दूसरा**, जब गलत करने वाले की ओर से लापरवाही एक अभियोक्ता की पहले से मौजूद स्थिति को फिर से सक्रिय करती है जो उपचार के कारण कम हो गई थी; **तीसरा**, गलत करने वाले के कार्यों से ज्ञात, पहले से मौजूद स्थितियां बढ़ जाती हैं, जिन्हें अभी तक चिकित्सा ध्यान नहीं दिया गया है; और **चौथा**, जब - गलती करने वाले के कार्यों से अभियोक्ता की स्थिति के कारण एक अपरिहार्य अक्षमता या जीवन की हानि में तेजी आती है, भले ही गलती करने वाले के कार्यों की अनुपस्थिति में समय के साथ घटना हुई हो। जैसा कि इन श्रेणियों और, नियम के नाम से ही पता चलता है, वे व्यक्ति जिनके लिए ²⁰जिन मामलों में इस नियम को लागू किया जा सकता है, वे ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास पहले से मौजूद स्थितियां हैं। ²¹इसलिए, इस नियम को उचित रूप से लागू करने और लागू करने के लिए, जिस व्यक्ति के मामले में एक न्यायिक प्राधिकरण लागू होता है, उसके पास पहले से मौजूद शर्त होनी चाहिए जो ऊपर वर्णित चार श्रेणियों में से किसी एक में आती है।

12.4.4 इस नियम के अनुप्रयोग को बेहतर ढंग से समझने के लिए विभिन्न क्षेत्राधिकारों में कुछ निर्णयों का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

- ❖ राजा की पीठ में [डुलियू बनाम वाइल एंड संस](#) ²² उस बार में उद्धृत अमेरिकी मामलों के संदर्भ में बोलते हुए जहां न्यूयॉर्क अदालत ने एक महिला को 'डराने' के लिए मुआवजा देने से इनकार कर दिया था, जो ट्राम की प्रतीक्षा करते समय, घोड़े से खींची गई गाड़ी से लगभग भाग गई थी, और उसी के परिणामस्वरूप बेहोश हो गई थी, गर्भपात और बाद की बीमारी से पीड़ित थी; टिप्पणी की:

“यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस अमेरिकी मामले में अभियोक्ता को ठीक

19 स्टीव पी. कैलेंड्रिलो और डस्टिन ई. बुएलर, एगशेल इकोनॉमिक्स: एगशेल अभियोक्ता नियम के लिए एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण, 74 ओहियो सेंट एलजे 375 (2013)

20 टॉट्स का पुनर्कथन (तीसरा): शारीरिक और भावनात्मक नुकसान के लिए देयता, अमेरिकी कानून संस्थान, 2010।

21 गीस्टफेल्ड, 2021 (ऊपर)

22 [\(1901\) 2 के. बी 669](#)

वैसा नुकसान नहीं उठाना पड़ता जैसा उसने झेला था, और शायद उतनी हद तक नहीं जितना उसने झेला था, अगर वह उस समय गर्भवती नहीं होती; और इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रतिवादियों के छोड़े यह अनुमान नहीं लगा सकते थे कि वह इस स्थिति में थी। लेकिन इस तथ्य से क्या फर्क पड़ता है? यदि किसी व्यक्ति को लापरवाही से कुचला जाता है या अन्यथा उसके शरीर में लापरवाही से घायल किया जाता है, तो यह पीड़ित के नुकसान के दावे का कोई जवाब नहीं है कि उसे कम चोट लगी होगी, या कोई चोट नहीं लगी होगी, अगर उसकी खोपड़ी असामान्य रूप से पतली या असामान्य रूप से कमजोर न होती।

- ❖ ग्रिफिथ्स एल. जे. श्वेत और अन्य बनाम प्रमुख दक्षिण यॉर्कशायर के सिपाही और अन्य इस नियम के संबंध में निम्नलिखित रूप में देखा गया -

“...कानून अपने नागरिकों से उचित धैर्य और मजबूती की उम्मीद करता है और कुछ व्यक्तियों की असाधारण दुर्बलता के लिए दायित्व नहीं लगाएगा। इसे “अंडे के खोल की खोपड़ी” की स्थिति के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जहां कर्तव्य के भंग के परिणामस्वरूप हुई क्षति अपेक्षा से अधिक गंभीर साबित होती है। यह कर्तव्य के भंग की एक सीमा परीक्षा है; इससे पहले कि एक प्रतिवादी को एक दर्शक के प्रति कर्तव्य के भंग में पकड़ा जाए, उसने उन्हें ऐसी स्थिति से अवगत कराया होगा जिसमें यह उचित रूप से पूर्वानुमेय है कि उचित मजबूती और धैर्य वाले व्यक्ति को मानसिक चोट लगने की संभावना होगी।

- ❖ कनाडा के सर्वोच्च न्यायालय ने ब्रिटिश कोलंबिया के लिए अपील न्यायालय से उत्पन्न एक अपील में, एथे बनाम लियोनाती²³ यह देखा गया कि यह मामला अपने शब्दों में, “पतली खोपड़ी नियम के सीधे अनुप्रयोग” में से एक है।” यहाँ दिए गए नियम का अनुप्रयोग, पहले से मौजूद स्थितियों के अस्तित्व को रेखांकित करता है। प्रासंगिक अनुच्छेद इस प्रकार हैं:-

43 ट्रायल जज के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि इस मामले में डिस्क हर्निएशन का कारण बनने के लिए पहले से मौजूद स्थिति और दुर्घटनाओं से होने वाली चोटों दोनों का होना आवश्यक था। उन्होंने एक सकारात्मक निष्कर्ष निकाला कि दुर्घटनाओं ने चोट में योगदान दिया, लेकिन दोनों दुर्घटनाओं में लगी चोटें हर्निएशन का “एकमात्र कारण नहीं” थीं। उन्होंने स्पष्ट रूप से पाया कि “हर्नियेशन असंबंधित नहीं था

दुर्घटनाओं के लिए "और यह कि दुर्घटनाओं ने बाद के हर्निएशन में" कुछ हद तक योगदान दिया "। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि दुर्घटनाओं में चोटों ने "मामूली होने के बावजूद कुछ कारणात्मक भूमिका निभाई"। इन निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि यह पहले से मौजूद स्थिति और दुर्घटनाओं में लगी चोटों का संयोजन था जो हर्निएशन का कारण बना। यद्यपि दुर्घटनाओं ने पहले से मौजूद समस्याओं की तुलना में कम भूमिका निभाई, फिर भी दुर्घटनाएं हर्निएशन लाने में एक आवश्यक घटक थीं।

44 साक्ष्य पर ट्रायल जज का निष्कर्ष था कि "[i] मेरे विचार में, अभियोक्ता ने संभावनाओं के संतुलन पर साबित किया है कि पहले की दो दुर्घटनाओं में लगी चोटों ने बाद के डिस्क हर्निएशन में कुछ हद तक योगदान दिया है।" उन्होंने इस योगदान को 25 प्रतिशत आंका। यह डी मिनिमिस अत्यल्प *बाहर आता* है और इसलिए यह एक भौतिक योगदान है: *बोनिंगटन कास्टिंग्स लिमिटेड बनाम वार्डलॉ, ऊपर/भौतिक* योगदान का यह निष्कर्ष प्रतिवादी को डिस्क हर्निएशन से होने वाले नुकसान के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी बनाने के लिए पर्याप्त था।

45 भौतिक योगदान का निष्कर्ष अनुचित नहीं था। हालाँकि अभियोक्ता को दुर्घटनाओं से पहले पीठ की समस्याओं का अनुभव हुआ था, लेकिन हर्निएशन या डिस्क के अपमान का कोई सबूत नहीं था और सियाटिका की शिकायतों का कोई इतिहास नहीं था। जब एक अभियोक्ता की दो दुर्घटनाएँ होती हैं जो दोनों पीठ की गंभीर चोटों का कारण बनती हैं, और उसके तुरंत बाद एक हल्के व्यायाम के दौरान एक डिस्क हर्निएशन का सामना करना पड़ता है जो वह अक्सर दुर्घटनाओं से पहले करता था, तो एक कारण संबंध का अनुमान लगाना उचित लगता है।

46 ट्रायल जज ने पाया कि जब हर्निएशन हुआ तो अभियोक्ता की हालत में सुधार हो रहा था, लेकिन इसका मतलब यह भी है कि अभियोक्ता अभी भी कुछ हद तक दुर्घटनाओं से पीठ की चोट से पीड़ित था। कारण संबंध का अनुमान चिकित्सा साक्ष्य द्वारा समर्थित था और उचित था।

47 इस अपील में पतली खोपड़ी नियम का सीधा अनुप्रयोग शामिल है। हो सकता है कि पहले से मौजूद स्वभाव ने चोटों को बढ़ा दिया हो, लेकिन प्रतिअभियोक्ता को अभियोक्ता को ले जाना चाहिए क्योंकि वह उसे पाता है। यदि प्रतिवादी की लापरवाही ने मौजूदा स्थिति को बढ़ा दिया और इसे डिस्क हर्निएशन में प्रकट कर दिया, तो प्रतिवादी डिस्क हर्निएशन का कारण बनता है और पूरी

तरह से उत्तरदायी होता है।

- ❖ आइए अब उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में इस नियम के अनुप्रयोग की ओर मुड़ें। रिचर्ड पॉसनर जे., 7वें सर्किट कोर्ट ऑफ अपीलस के लिए बोलते हुए जेम्स ई.नीहस और डेनिस नीहस बनाम विंस लाइबेरियो और फ्रैंक विटोरियो²⁴, जैसा कि नीचे बताया गया है:

“नीहस काफी नशे में था जब उसकी कार को टक्कर लगी कि उसे टूटे हुए गाल की हड्डी का दर्द महसूस नहीं हुआ होगा।लेकिन कम से कम प्रतिवादियों के वकील के अनुसार जब तक स्टेशन हाउस में कई घंटों बाद बहस शुरू हुई, तब तक वह बहुत शांत हो गया था (हालांकि यह असंभव लगता है), फिर भी उसने लड़ाई के बाद तक अपने गाल में दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा।डॉक्टरों ने गवाही दी क्योंकि हमने कहा कि ब्रेक एक लात के साथ सुसंगत था, हालांकि यह निश्चित रूप से दुर्घटना में नीहस द्वारा कार के दरवाजे पर उसके सिर पर प्रहार करने के कारण हो सकता है। यदि जूरी का मानना था, जैसा कि उसे करने का पूरा अधिकार था, कि नीहस को उसके चेहरे के बाईं ओर लात मारी गई थी प्रतिवादियों, यह तथ्य कि गाल की हड्डी पहले ही टूट चुकी होगी, प्रतिवादियों की मदद नहीं करेगी।यदि आप किसी व्यक्ति की ताजा टूटी हुई गाल की हड्डी को लात मारते हैं तो आप चोट को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं, और "अंडे की खोपड़ी" या "पतली खोपड़ी" नियम, अधिकारियों को उनकी लातों के पूरे परिणामों के लिए उत्तरदायी बना देगा, भले ही यह पहले से मौजूद चोट के लिए न होता, परिणाम बहुत कम हानिकारक होते। अजीब तरह से, प्रमुख "अंडे के खोल की खोपड़ी" मामले में भी एक लात शामिल थी।”

- ❖ हम उसी न्यायालय से एक अन्य उदाहरण का भी उल्लेख कर सकते हैं।लैंकेस्टर बनाम नॉरफ़ॉक और पश्चिमी राइ। कं.²⁵, यह नियम इस प्रकार लागू किया गया था:-

“इसके अलावा, वास्तव में जो कुछ भी मायने रखता है, वह यह है कि टायनन के कदाचार का श्रेय रेल मार्ग को दिया जा सकता है, जैसा कि प्रतिवादीदाता वरिष्ठ की पूरी तरह से पारंपरिक व्याख्या के तहत आसानी से किया जाता है।यह वही था (जूरी को मिल सकता था) जिसने लैंकेस्टर को किनारे पर धकेल दिया। यह कि लैंकेस्टर को पहले के कृत्यों द्वारा

24 973 एफ. 2डी 526 (7वां सिर। 1992)

25 773 एफ. 2डी 807.820 (7वां सिर। 1985)

इस तरह के कदाचार के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील बनाया गया हो सकता है, जिसके लिए रेल मार्ग उत्तरदायी हो सकता है या नहीं भी हो सकता है, कोई बचाव नहीं होगा। "पतली खोपड़ी", या अधिक रंगीन रूप से "अंडे की खोल खोपड़ी", नियम के तहत, रेल मार्ग टायनन के हमले के परिणामों के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी होगा। देखें, उदाहरण के लिए, वोसबर्ग बनाम पुटनी, 80 विस. 523,50 एन. डब्ल्यू. 403 (1891); स्टोलसन बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका, 708 एफ. 2डी 1217,1221 (7वां सिर 1983)।")

XXXX

यह तथ्य कि रेलवे ने पहले के कदाचार से लैंकेस्टर को कमजोर कर दिया था, जिसके लिए उसे उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता था, अप्रासंगिक होगा। टिनान के हमले के लिए उसके दायित्व और उसे नुकसान की राशि का भुगतान करना होगा। टॉर्टफीज़र अपने शिकार को ले जाता है क्योंकि वह उसे पाता है (जोरदार रूप से अगर पीड़ित की कमजोर स्थिति पहले के कारण है, हालांकि समय-बाधित, उसी टॉर्टफीज़र के टॉर्ट्स); यह अंडे के खोल-खोपड़ी का नियम है। टायनन के एकल कार्य ने रेल मार्ग को उन सभी नुकसानों के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी बना दिया जो लैंकेस्टर ने मांगे थे और जूरी ने उन्हें सम्मानित किया था।"

13. आइए अब हम अपना ध्यान वर्तमान में तथ्यों की ओर *मोड़ें। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के हितकारी उद्देश्य के संबंध में कानून की पूर्व-उल्लिखित स्थिति को ध्यान में रखते हुए, चिकित्सा लापरवाही का आरोप लगाने के लिए आवश्यक पहलुओं, एक मामले में मुआवजे का निर्धारण जहां कोई व्यक्ति घायल हो जाता है, हम पाते हैं कि जिस तरह से राज्य आयोग और एन. सी. डी. आर. सी. द्वारा मुआवजे में कमी की गई है, जबकि जिला मंच संदिग्ध तर्क पर आधारित है।*
14. राज्य आयोग ने माना है कि इसमें अपीलकर्ता का "चिकित्सा चिकित्सालय में अपेक्षित देखभाल" के साथ *इलाज नहीं किया गया था; वह 2005 से दिसंबर, 2008 तक लगातार दर्द से पीड़ित थी; और शल्य चिकित्सा के बाद की देखभाल की कमी थी जो निस्संदेह सेवा में कमी का गठन करती है और फिर भी मुआवजे को केवल 1 लाख रुपये तक कम करना उचित पाया। यह स्पष्ट रूप से मुआवजे का निर्धारण करते समय ध्यान में रखे जाने वाले हितों के संतुलन के अनुरूप नहीं है।*
15. एन. सी. डी. आर. सी. ने पाया कि प्रतिवादी-अस्पताल में दावेदार-अपीलकर्ता का *इलाज 'आकस्मिक' था; कि अन्य अस्पतालों में इलाज कराने का बहाना प्रतिवादी के लिए*

उपलब्ध नहीं था और एक दशक से अधिक समय से मामले को घसीटे जाने के अलावा उन्हें 5 साल से अधिक समय से दर्द हो रहा था, और फिर भी एकमुश्त मुआवजा केवल 2 लाख रुपये था।

16. अस्पताल द्वारा प्रदान की गई सेवा के बारे में टिप्पणियों के बाद इस तरह के मुआवजे को कैसे उचित ठहराया जा सकता है, कम होने के कारण, और दावेदार-अपीलार्थी की ओर से निरंतर दर्द और पीड़ा कुछ ऐसी है जिसे हम समझने में विफल हैं। क्षतिपूर्ति अपनी प्रकृति से ही न्यायसंगत होनी चाहिए। पीड़ा के लिए, जिसका कोई भी हिस्सा दावेदार-अपीलार्थी की अपनी गलती नहीं थी, उसे एक ऐसी राशि से सम्मानित किया गया है जिसे, सबसे अच्छा, 'तुच्छ' के रूप में वर्णित किया जा सकता है।
17. एग्सशेल-स्कल नियम के लागू होने के संबंध में, हम देख सकते हैं कि विवादित निर्णय इस बारे में मौन है कि यह नियम वर्तमान मामले पर कैसे लागू होता है। कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया गया है कि किन मानदंडों की जांच की गई थी, और फिर, विश्लेषण पर, दावेदार-अपीलकर्ता द्वारा यह कहा जाने के लिए पूरा किया गया कि उसकी अंडे की खोपड़ी थी, या उस मामले के लिए, वह किस तरह की पहले से मौजूद स्थिति से पीड़ित थी, जिससे वह आंत्रपुच्छकोप की सर्जरी के कारण आई ऐसी प्रतिक्रिया के प्रति अधिक संवेदनशील हो गई थी। बस इतना ही कहा गया है,

“9. इसलिए, ओ. पी. यह दलील नहीं दे सकता है कि रोगी ने कुछ अन्य अस्पतालों से उपचार लिया था, जिसके कारण पेट की दीवार में सुई बनी रह सकती थी। इस संदर्भ में हम इस मामले में "अंडा खोपड़ी नियम" लागू करते हैं, जिसमें पूर्व चोटों या स्थितियों के बढ़ने से होने वाले नुकसान के लिए देयता मौजूद होती है। यह एक व्यक्ति को उनकी गतिविधियों के परिणामस्वरूप होने वाले सभी परिणामों के लिए उत्तरदायी ठहराता है जिससे चोट लगती है, भले ही पीड़ित को पहले से मौजूद भेद्यता या चिकित्सा स्थिति के कारण असामान्य क्षति हो।

यदि हम एन. सी. डी. आर. सी. द्वारा बताए गए नियम को लेते हैं, तो भी यह तर्कपूर्ण है कि रिकॉर्ड में पहले से मौजूद भेद्यता या चिकित्सा स्थिति की बात होनी चाहिए थी, जिसके कारण पीड़ित को 'असामान्य क्षति' का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, किसी भी आदेश-चाहे वह जिला हो, राज्य आयोग हो या एन. सी. डी. आर. सी.- में ऐसी किसी भी शर्त का उल्लेख नहीं है।

18. उपरोक्त चर्चा को ध्यान में रखते हुए, हम एन. सी. डी. आर. सी. और राज्य आयोग के पुरस्कारों को अलग रखना और जिला मंच द्वारा पारित पुरस्कार को बहाल करना

उचित समझते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रतिवादी द्वारा अपीलकर्ता को चिकित्सकीय रूप से लापरवाही बरतने और प्रकृति में कम सेवाएं प्रदान करने के लिए 5 लाख रुपये की राशि का शीघ्रता से भुगतान किया जाना चाहिए। जिला फोरम द्वारा पारित पुरस्कार की तारीख से 5 लाख रुपये की राशि पर 9 प्रतिशत की दर से सरल प्रकृति का ब्याज दिया जाएगा। इस फैसले की तारीख से चार सप्ताह की अवधि के भीतर इसका भुगतान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, मुकदमे की लागत के संदर्भ में Rs.50,000/- की लागत का भुगतान किया जाना चाहिए। तदनुसार अपील की अनुमति दी जाती है।

हेडनोट तैयारकर्ता: दिव्या पांडे

मामले का परिणाम:
अपील की अनुमति दी गई।

प्रेम पाल रान्टा
(सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश)